महादेवी वर्मा की कविता में गीति–तत्त्व

डॉ. प्रियंका मिश्र

महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व वह क्षितिज है जहाँ पर उनके काव्य का आकाश और उस काव्य में व्याप्त गीतों की ज़मीन का संसार एक–दूसरे को छूते से प्रतीत होते हैं। महादेवी वर्मा छायावाद के चार आधर–स्तम्भों में से एक हैं। छायावादी चतुष्ट्य के प्रत्येक कलाकार में गीति–प्रतिभा की कुछ अलग–अलग विशेषताएँ हैं, क्योंकि इन सभी कवियों ने अपने व्यक्तित्व की कुछ निजी जटिलताएँ हैं। जहाँ प्रसाद ने अपने काव्य को गीतिमत्ता से भर दिया वहीं निराला ने अपने गीतों में भी महाकाव्यात्मकता को उतार दिया है। किन्तु पन्त और महादेवी गीतिकाव्य की आत्मा की रक्षा कर लेते हैं। ये दोनों गीत की मधुरता, संगीतात्मकता, नाद–सौन्दर्य एवं अन्य अपेक्षित तत्वों का निर्वाह करते हुए गीतिकाव्य के आदर्श एवं विधन का निर्वाह करते दिखायी पड़ते हैं।

महादेवी की कविताओं में कुछ ऐसी विशेषताएँ मिलती हैं कि जिसे छायावाद के किसी अन्य कवि में समाहित नहीं किया जा सकता। कल्पना–विधन, शब्द–रचना, प्रतीकात्मकता और शब्दों की विलोमात्मक संगति उनमें विशेष रूप से दिखायी देती है। इसके साथ ही तरलता, सहजता और तन्मयता जैसे गुण उनकी कविताओं के विशेष पहचान बन जाते हैं। जबकि गीत में किसी एक विचार, भाव या घटना का चित्राण तन्मयता के साथ किया जाता है। गीत की रचना गेय पदों में होती है तथा उसमें भाषा की सुकुमारता विद्यमान रहती है। गीतों में प्रायः वैयक्तिक अनुभूतियाँ अर्थात् आत्माभिव्यक्ति रहती है। वेदना एवं उल्लास के अतिरेक से मानव–हृदय स्पन्दित होकर जो स्वर–विधन करता है वह काव्य 'गीति–काव्य' की संज्ञा से विभूषित होता है। रस्किन के अनुसार - 'गीति काव्य कवि की निजी भावनाओं का प्रकाश होता है।' ब्रूनतेयर भी इसी को और स्पष्ट तौर पर कहते हैं . **'गीतिकाव्य में कवि भावानुकूल लयों में अपनी आत्मनिष्ठ वैयक्तिक भावना व्यक्त करता है। भावनाओं की तीव्रता गीत का अन्यतम गुण है जिसे भाव–प्रवणता कहते हैं।'**[1]

मनुष्य जब सुख और दुख की अवस्था में, आनन्द और विषाद के क्षणों में अपने मुख से जो 'स्वर–लहरी' उत्पन्न करता है उसे ही 'गीत' कहा जाता है। अतः गीतिकाव्य या गीत मनुष्य को दुख और सुख के समय में ऐसी शक्ति प्रदान करता हे कि वह अन्य मनुष्यों को अपना हिस्सेदार बनाकर हलका हो जाता है। महादेवी वर्मा ने लिखा है –

" साधरणतः गीत व्यक्तिगत सीमा में तीव्र सुख–दुखात्मक अनुभूति का वह शब्द रूप है, जो अपनी ध्वन्यात्मकता में गेय हो सके। " [2]

नारी होने के कारण महादेवी वर्मा की लेखनी स्वाभाविक रूप से गीतिकाव्यात्मक है, क्योंकि महादेवी ने स्वयं अपने जीवन में सुख और दुख रूपी धूप–छाया को बहुत करीब से देखा और महसूस किया है। अतः उनके सुख और दुख के अनुभवों से उनकी लेखनी ने न जाने कितने गीतों को जन्म दिया। महादेवी की प्रतिभा नारी–सुलभ सहजता के साथ गीति–मूलक है। गीतिकाव्य की सपफल रचना के लिए जिन तत्वों की आवश्यकता होती है, वे मुख्यतः इस प्रकार हैं वैयक्तिकता की अध्किता, संकेत की प्रधनता, संगीतात्मकता या गेयता, चित्रा–कल्पना,

प्रभावान्विति, पद–संगति, सहजानुभूति और सौन्दर्य चेतना।

महादेवी की कविता में गीतिकाव्य की सभी विशेषताएँ उपलब्ध होती हैं। उन्होंने अपने हृदय की संचित अनुभूतियों को ही गीत के रूप में उतारा है। अपने सुख–दुख एवं हर्ष–विषाद को ही वे अपने काव्य का विषय बनाती हैं। उनके गीतों में व्यक्ति एवं जगत का दुख सर्वत्रा व्याप्त है। अतः गीतिकाव्य में कवि का व्यक्तित्व प्रत्यक्ष हो उठता है। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी का भी मत है . *फगीत में ही कवि का व्यक्तित्व पूरी तरह प्रतिबिम्बित होता है। वह कवि की सच्ची आत्माभिव्यंजना होती है। कवि के अंतस्तल का उद्घाटन गीत में ही संभव है।*[3] इसी कारण कवयित्राी अपने को विरह का 'जलजात' बताती हुई कहती है -

विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात।

वेदना में जन्म करुणा में मिला आवास।

अश्रु चुनता दिवस इसका अश्रु गिनती रात।

जीवन विरह का जलजात।।

गीति काव्य में राग तत्व की प्रधनता होती है जिसमें भाव एवं रस का समावेश रहता है। इस रागात्मकता से ही गीत में भाव–सम्प्रेषण का गुण आता है और उसे सुनते ही पाठक पर गीत का अद्भुत प्रभाव दिखाई पड़ता है। महादेवी के काव्य में यह रागात्मकता विद्यमान है। महादेवी के अनुसार - फगीति का चिरन्तन विषय रागात्मिका वृत्ति से सम्बन्ध रखने वाली सुखदुखात्मक अनुभूति ही रहेगी।[4] अपने जीवन कीतुलना नीर भरी बदली से अत्यन्त रागात्मक भाव से करते हुए वे कहती हैं .

मैं नीर भरी दुख की बदली।

विस्तृत नभ का कोई कोना,

मेरा न कभी अपना होना।

परिचय इतना इतिहास यही,

उमड़ी कल थी मिट आज चली।

'गेयता' गीत का प्राण है। रवीन्द्र–शैली में भी हम इसी गेयता को काव्य–संगीत के रूप में पाते हैं। महादेवी के गीतों में भी गेयता का तत्व विद्यमान है। संगीत की मधुर स्वर लहरियों से ही गीत का माधुर्य बढ़ता है, वही भाव को मुखरित करता है और वही उसमें संगीत की अखण्ड रसधरा प्रवाहित करता है। महादेवी ने छंद और तुक का निर्वाह सर्वत्रा किया है। उनके गीतों में नाद सौन्दर्य भी विद्यमान है तथा आकारगत लघुता भी। यथा -

क्या पूजा क्या अर्चन रे।

उस असीम का सुन्दर मन्दिर मेरा लघुतम जीवन रे।

मेरी श्वासें करती रहतीं नित प्रिय का अभिनन्दन रे।

पद रज को धेने उमड़े आते लोचन में जलकण रे।।

आधुनिक आलोचकों की तरह और नए कवियों की तरह महादेवी ने 'लिरिक' का अंधनुकरण नहीं किया। महादेवी का मानना था कि भारतीय साहित्य में गीति अथवा गेय रचनाओं का प्रारम्भ 'वैदिक काल' में ही हो गया था। कवयित्राी ने अपनी इस धरणा को सि(करने के लिए 'वेद–गीत' और 'काव्य–गीत' के बीच की कड़ी को जोड़ते हुए यह कहा है कि – " *बौ(धर्म जीवन की विषमता से उत्पन्न है अतः दुख–निवृत्ति के अन्वेषकों के समान वह भाव के प्रति अधिक निर्मम रहा। पर उसकी विशाल करुणासिक्त पृथ्वी पर जो गीत के पफूल खिले, वे जीवन से सुरभित और दुःख के नीहार कणों से बोझिल है। वैयक्तिक रागभरी थेरगाथाएँ अपनी*

भाषा और भाव के कारण वेद–गीत और काव्य–गीतों के बीच कड़ी जैसी लगती हैं। "[5]

महादेवी वर्मा के गीतों में भावनाओं का सूनापन और शिल्प की सुन्दरता का ऐसा सुन्दर संयोग मिलता है जो उनकी मधुर चिन्तनधरा की गति और लय की एकरसता को बनाए रखता है। यथा -

जाग जाग सुकेशिनी री!

अनिल ने आ मृदुल हौले

शिथिल वेणी–बंध खोले

पर न तेरे पलक डोले

बिखरती अलकें, झरे जावे

सुमन वरवेषिनी री!

कवयित्री ने इन पंक्तियों में भाव और विचार की दृष्टि से मार्मिकता और माधुर्य को जो संयोजन किया है वह अद्‌भुत है। इसी तरह वे भावनाओं और विचार–चित्रों तथा शिल्प–संघटन का सुन्दर झरोखा प्रस्तुत करते हुए कहती हैं -

/घिरती रहे रात!

न पथ रूंधती ये

गहनतम शिलाएँ

न गति रोक पाती

पिघल मिल दिशाएँ

चली मुक्त मैं ज्यों मल की मधुर बात।

घिरती रहे रात!

महादेवी वर्मा के गीतों में ध्वन्यात्मक शब्दों के अनेक सुन्दर प्रयोग मिलते हैं। इस प्रकार के प्रयोग पंत की कविताओं में भी बहुत अधिक मिलते हैं किन्तु महादेवी के गीतों में केवल वर्णात्मक ध्वन्यात्मकता ही नहीं आंतरिक और सारगर्भित ध्वन्यात्मकता भी मिलती है। इस तरह कवयित्री ने शब्द, भाव और अर्थ तीनों की संगीत–गति का प्रयोग अपनी कविताओं में सहज रूप से किया है।

इस आधर पर यह कहा जाता सकता है कि महादेवी वर्मा के गीत और उनकी अभिव्यक्ति अब उनके व्यक्तित्व की पहचानबन गए हैं। 'मैं नीर भरी दुख की बदली' एक ऐसा ही गीत हैं। स्वयं महादेवी ने ही गीति को परिभाषित करते हुए लिखा है कि *पकाव्य की ऊंची–ऊंची हिमालय–श्रेणियों के बीच में गीति–मुक्तक एक सजल–कोमल मेघखण्ड है, जो न उनसे दबकर टूटता है और न बंधकर रुकता है। प्रत्युत हर किरण से रंग–स्नात होकर उन्नत चोटियों का श्रृंगार कर आता है और हर झोंके पर उड़–उड़कर उस विशालता के कोने में अपना स्पंदन पहुँचाता है।* "[6]

स्पष्ट है कि महादेवी की कविताएँ और उनमें विद्यमान उनका गीति–तत्व इन सारे नियमों का वहन करता है तभी तो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल सरीखे आलोचक ने भी लिखा है – " गीत लिखने में जैसी सपफलता महादेवी जी को हुई, वैसी और किसी को नहीं। न तो भाषा का ऐसा स्निग्ध और प्रांजल–प्रवाह और कहीं मिलता है, न हृदय की ऐसी भाव–भंगिमा। जगह–जगह ऐसी ढली हुई और अनूठी व्यंजना से भरी पदावली मिलती है कि हृदय खिल उठता है। "[7]

संदर्भ

1. साभार, आधुनिक साहित्य चिन्तन, डॉ. हरीश अरोड़ा एवं डॉ. गुंजन कुमार झा, पृष्ठ 17–18
2. महादेवी वर्मा, साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध, पृष्ठ 122
3. नन्ददुलारे वाजपेयी, आधुनिक साहित्य, पृष्ठ 24
4. महादेवी वर्मा, साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध, पृष्ठ 127
5. महादेवी वर्मा, 'भूमिका', रश्मि, पृष्ठ IV
6. महादेवी वर्मा, साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध, 130
7. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 389

Copyright © 2016, Dr. Priyanka Mishra. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.